कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



भारत और महामंदी :-

- भारत में महामंदी के असर से यह पता चलता है कि 20वीं सदी की शुरूआत तक वैश्विक अर्थव्यवस्था कितनी एकीकृत हो चुकी थी।
- दुनिया के एक हिस्से में पैदा होने वाले संकट की कँपकँपाहट बाकी हिस्सों तक भी पहुंच जाती थी।
- इससे पूरी दुनिया के लोगों की जिंदगी तथा अर्थव्यवस्थाऐं प्रभावित हो जाती थीं।

भारत में प्रभाव :-

- हम जानते हैं कि उस समय भारत एक उपनिवेश था तथा वह कृषि वस्तुओं का निर्यातक और तैयार माल का आयातक बन चुका था।
- महामंदी ने भारतीय व्यापार को फौरन प्रभावित किया।
- 1928–1934 के बीच देश के आयात–निर्यात घट कर आधे रह गये थे।
- जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतें गिरने लगीं तो यहां भी कीमतें नीचे आ गई।
- 1928–1934 के बीच भारत में गेहूं की कीमत 50 प्रतिशत गिर गई थी।

- शहरी निवासियों के मुकाबले किसानों और काश्तकारों को ज्यादा नुकसान हुआ।
- यद्यपि कृषि उत्पादों की कीमत तेजी से गिरी लेकिन सरकार ने लगान वसूली में छूट देने से साफ इन्कार कर दिया।
- सबसे बुरी मार उन काश्तकारों पर पड़ी जो विश्व–बाजार के लिए उपज पैदा करते थे।
- उदाहरण :- बंगाल में जूट/पटसन उगाने वाले लोग कच्चा पटसन उगाते थे जिससे कारखानों में टाट की बोरियां बनाई जाती थीं।
- जब टाट का निर्यात बंद हो गया तो कच्चे पटसन की कीमतों में 60 प्रतिशत से भी ज्यादा गिरावट आ गई।
- जिन काश्तकारों ने दिन फिरने की उम्मीद में उपज बढ़ाने के लिए कर्जे ले लिए थे उनकी हालत भी उपज का सही दाम न मिलने के कारण खराब थी।
- वे दिनों–दिन और कर्जे में डूबते जा रहे थे।

इसी स्थिति को ध्यान में रखकर बंगाल के एक कवि ने लिखा था –

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

चलो भाइयों नकद की उम्मीद में,
और ज्यादा पटसन तुम उगाओ।
लागत और कर्जे में पिसकर नाउम्मीदी पाओ।
सारी पूँजी, लगा फँसाकर, फसल खड़ी कर जाओ।
घर पर बैठे बनिये देंगे पांच रूपये मन भाव ।

- पूरे देश में काश्तकार पहले से भी ज्यादा कर्जे में डूब गये।
- खर्चे ज्यादा थे इस चक्कर में उनकी बचत भी खत्म हो चुकी थी।
- जमीन सूदखोरों के पास गिरवी पड़ी थी, घर में जो भी गहने-जेवर थे वे बिक चुके थे।
- मंदी के इसी दौर में भारत कीमती धातुओं का जैसे -सोने का निर्यात करने लगा।
- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कीन्स का मानना था कि भारतीय सोने के निर्यात से भी वैश्विक-अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में काफी मदद मिली।
- यद्यपि इस निर्यात से ब्रिटेन की आर्थिक दशा सुधारने में तो काफी मदद मिली लेकिन भारतीय किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ।
- 1931 में मंदी अपने चरम पर थी और ग्रामीण भारत असंतोष व उथल पुथल के दौर से गुजर रहा था।
- उसी समय महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।

- यह मंदी शहरी भारत के लिए इतनी दुखदाई नहीं रही।
- कीमतें गिरते जाने के बावजूद शहरों में रहने वाले ऐसे लोगों की हालत ठीक रही जिनकी आय निश्चित थी।
- जैसे - वे जमींदार जो शहरों में रहते थे तथा गांवों की उनकी जमीन का बंधा-बंधाया भाड़ा मिलता रहता था, या मध्यवर्गीय वेतनभोगी कर्मचारी।
- राष्ट्रवादी खेमे के दबाव में उद्योगों की रक्षा के लिए सीमा शुल्क बढ़ा दिये गये थे जिससे औद्योगिक क्षेत्र में भी निवेश में तेजी आई।

विश्व-अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण : युद्धोत्तर काल :-

- प्रथम विश्व युद्ध खत्म होने के केवल दो दशक बाद दूसरा विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया था। यह युद्ध भी 2 बड़े खेमों के बीच लड़ा गया था।

एक गुट में धुरी शक्तियां थीं जिनमें मुख्य रूप से-

1. नात्सी जर्मनी
2. इटली
3. जापान

दूसरे खेमे में मित्र राष्ट्र थे -

1. ब्रिटेन
2. फ्रांस
3. सोवियत संघ

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

4. अमेरिका

- यह युद्ध 6 साल तक चला था जो जल, थल तथा नभ (जमीन, हवा और पानी) के असंख्य मोर्चों पर लड़ा गया था।
- इस युद्ध में मौत और तबाही की कोई हद बाकी नहीं बची थी।
- इस जंग में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से करीब 6 करोड़ लोग मारे गये थे। जो कि 1939 की विश्व की जनसंख्या का लगभग 3 प्रतिशत था तथा करोड़ों लोग घायल हुए थे।
- अब तक युद्धों में मोर्चे पर मरने वालों की संख्या ज्यादा होती थी लेकिन इस युद्ध में ऐसे लोग ज्यादा मरे जो किसी मोर्चे पर नहीं लड़ रहे थे।
- यूरोप और एशिया के विशाल भू-भाग तबाह हुए।
- कई शहर हवाई बमबारी या लगातार गोलीबारी के कारण मिट्टी में मिल गये।
- इस युद्ध में बेहिसाब आर्थिक और सामाजिक तबाही हुई।



रूस पर हमला करती जर्मन टुकड़ियाँ :
जुलाई 1941 रूस पर हिटलर का हमला



सोवियत रूस में युद्ध से तबाह स्तालिनग्राद

शक्तियों के साये में आगे बढ़ा -

1. अमेरिका 2. सोवियत संघ

- पश्चिमी विश्व में अमेरिका आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से एक वर्चस्वशाली ताकत बन चुका था।
- दूसरी ओर सोवियत संघ भी एक वर्चस्वशाली शक्ति के रूप में सामने आया।
- नात्सी जर्मनी को हराने में सोवियत संघ की जनता ने भारी कुर्बानियाँ दी थीं।
- जिस समय पूंजीवादी दुनिया महामंदी से जूझ रही थी उसी दौरान सोवियत संघ के लोगों ने अपने देश को एक पिछड़े खेतीहर देश की जगह विश्व-शक्ति की हैसियत में ला खड़ा किया था।

युद्धोत्तर बंदोबस्त और ब्रेटन-वुड्स संस्थान:-

- दो विश्वयुद्धों के बीच मिले आर्थिक अनुभवों से अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने दो अहम सबक निकाले।

प्रथम सबक था :-

"वृहत उत्पादन करने वाला कोई भी औद्योगिक समाज तब तक कायम नहीं रह सकता जब तक

युद्धोत्तर काल में पुनर्निर्माण :-

- युद्धोत्तर काल में पुनर्निर्माण का काम दो बड़ी

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

उपभोग भी व्यापक न हो।''

- व्यापक उपभोग के लिए आमदनी ज्यादा तथा स्थिर होनी आवश्यक है।
- स्थिर आमदनी के लिए पूर्ण रोजगार आवश्यक है।
- लेकिन बाजार पूर्ण रोजगार की गारंटी नहीं दे सकता।
- उपज, कीमत और रोजगार के उतार-चढ़ाव को सरकार द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है।
- इसलिए आर्थिक स्थिरता केवल सरकारी हस्तक्षेप से ही नियंत्रित की जा सकती थी।

दूसरा सबक था :-

- यह बाहरी दुनिया के साथ संबंधों के बारे में था।
- पूर्ण रोजगार का लक्ष्य केवल तभी हासिल किया जा सकता है जब सरकार के पास वस्तुओं, पूंजी और श्रम की आवाजाही को नियंत्रित करने की ताकत हो।
- इन युद्धों के बाद अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था बनाये रखने का उद्देश्य रखा गया जिसमें -

1. औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं
2. पूर्ण रोजगार बनाये रखना था।

- इस फ्रेमवर्क पर कार्य करते हुए -

'जुलाई - 1944 में अमेरिका में न्यू हैम्पशर के ब्रेटन-वुड्स नामक स्थान पर'
'संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन' का आयोजन किया गया था।

- इस सम्मेलन में 2 संस्थाओं की स्थापना की गई।
- सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए इस सम्मेलन में 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (I.M.F.) की स्थापना की गई।
- युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए पैसे के इंतजाम करने के वास्ते 'अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक' का गठन किया गया जिसे विश्व बैंक भी कहा जाता है।
- इसी वजह से I.M.F. तथा विश्व बैंक को 'ब्रेटन-वुड्ज संस्थान' या 'ब्रेटन वुड्ज ट्विन' (ब्रेटन-वुड्स की जुडवाँ संतान) भी कहा जाता है।
- विश्व बैंक तथा I.M.F. ने 1947 में औपचारिक रूप से काम करना शुरू किया।
- इन संस्थानों की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियंत्रण रहता है।
- अमेरिका विश्व बैंक और I.M.F. के किसी भी फैसले को वीटो कर सकता है।

वीटो :- विशेषाधिकार, इस अधिकार के सहारे एक ही सदस्य की असहमति किसी भी प्रस्ताव को खारिज करने का आधार बन जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था - यह राष्ट्रीय मुद्राओं को एक दूसरे से जोड़ने वाली व्यवस्था है।

- ब्रेटन वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित होती थी। इसमें राष्ट्रीय मुद्राऐं -

जैसे :- भारतीय मुद्रा रूपया-डॉलर के साथ एक निश्चित विनिमय दर से बंधा हुआ था।

- 1 डॉलर के बदले में कितने रूपये देने होंगे यह स्थिर रहता था।
- डॉलर का मूल्य सोने से बंधा रहता था।
- 1 डॉलर की कीमत 35 औंस सोने के बराबर निर्धारित की गई थी।

Download Mission Cyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here